# अरविन्द कुमार त्रिपाठी
# द्वारा
# पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड
# का संक्षिप्त वर्णन






पिछड़ापन – कारण व समाधान
**Backwardness Reason and Solutions**

Puratan BANDA, Bundelkhand ka Sankshipt Varnan

Arvind Kumar Tripathi

ISBN : 978-93-5906-820-6

| | |
|---|---|
| अध्याय शीर्षक | पिछड़ापन – कारण व समाधान |
| सर्वाधिकार | अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक |
| आइ एस बी एन/ **ISBN** | **978-93-5906-820-6** |
| प्रकाशक | अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक<br>ग्राम – अछरौन्ड,<br>बान्दा – 210 001<br>उत्तर प्रदेश |
| मूल्य | निःशुल्क, पुस्तक मित्र को देना |
| सन्स्करण | प्रथम, 01 अप्रैल 2020 |
| आवरण/मुखपृष्ठ | अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक |
| शब्द – संयोजन | अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक |
| मुद्रक | अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक |
| सन्दर्भ/साभार/सौजन्य | अध्याय **Reference** देखे |

| | |
|---|---|
| **Chapter Heading** | **Backwardness Reason and Solutions** |
| **Copyright @** | **Arvind Kumar Tripathi, The Writer** |
| **ISBN** | **978-93-5906-820-6** |
| **Publisher** | **Arvind Kumar Tripathi**<br>**Village - Achharaund**<br>**Banda - 210 001**<br>**Uttar Pradesh** |
| **Price** | **Free, Circulate to Friends** |
| **Edition** | **First, 01 April 2020** |
| **Cover Main** | **Arvind Kumar Tripathi, The Writer** |
| **Word Compositor** | **Arvind Kumar Tripathi, The Writer** |
| **Printer** | **Arvind Kumar Tripathi, The Writer** |
| **Reference/ Gratitude/ courtesy** | **Peruse Chapter - REFERENCE** |

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड – पिछड़ापन– नशा– कारण व समाधान का संक्षिप्त वर्णन

# अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

नशे की आदत

बान्दा और शराब के शौकीन

8 मार्च 2023 होली के कुछ दिन के बाद का समाचार है कि केवल 2 दिन में ढाई करोड़ की मदिरा बेची गई और यह आबकारी विभाग की ओर से पेश किया गया आंकड़ा है। आम दिनों की अपेक्षा रविवार को एक करोड़ 10 लाख, सोमवार को 1 करोड़ 40 लाख से अधिक की शराब बेची गई है। बान्दा में अंग्रेजी शराब के 61, देसी शराब की 144 और बीयर की 40 दो मॉडल दुकान भी हैं। आम तौर पर सभी दुकानों में हर रोज लगभग 70 से 80 लाख रुपए की बिक्री होती है लेकिन होली की वजह से रविवार और सोमवार को बिक्री के आंकड़ों ने आसमान छू लिया जो सामान्य दोनों के सापेक्ष दुगनी है।
80लाख रु/60रु मतलब 1,33,334 पौवे

बान्दा शहर में बहुतायत में गुटका, तम्बाकू, शराब के पाउच मिलते हैं जो स्वाास्थ्य बुरा तरह नष्ट करते है। इलाज में घर बिक जाते है। जिनमें कुछ विशिष्ट बहुतायत में बिकने वाले नाम है– केसर, कमला, राज्य से असम के सिग्नेचर, विमल, डायरेक्टर, रजनीगंधा, कॉकटेल, कमला पसंद, पावर, नवरत्न, मयंक, महक, सिल्वर, आदि यह कुछ ऐसे ब्रांड है जो बान्दा में सबसे ज्यादा बिकते हैं। इनके अलावा और भी सारे ब्रांड है जिनकी जानकारी नहीं हो पाई या उनकी खपत बहुत कम है। वैसे तो पूरे भारत में 15 हजार से ज्यादा ब्रांड बिकते हैं लेकिन लेकिन बान्दा शहर में उपर्युक्त नशे सबसे ज्यादा बिकते हैं। जिनमें कुछ समय पहले जो केसर नंबर एक ब्रांड था अब उसकी जगह एसएनके ब्रांड टॉप पर आ चुका है। गुटका सप्लाई करने वाले व्यापारी (देवकीनंदन गुप्ता) का कहना है कि केवल बान्दा बान्दा में ही 1.5 करोड़ से ज्यादा का गुटका तम्बाकू और पाउच वगैरा बिकते हैं जिनकी रेंज₹2, ₹5, 8, 10, 30, 50, 70 से लेकर 800 रुपए तक की ब्रांडिंग है। बान्दा में 1.5 करोड रुपए का व्यापार है संभव होता है यह डिक्लेयर्ड है जिस पर टैक्स दिया जा रहा होगा इसके अलावा जो अन्य रास्तों से यहां पहुंचता है, जिसका टैक्स नहीं दिया जाता, इसमें शामिल किया जा सकता है। इसके अलावा लगभग इतने ही रूपयों की शराब भी बिक जाती है। अब वैध शराब मनमानी उपलब्ध है तो बीड़ी और सिगरेट तम्बाखू काफी महंगे होने के बावजूद एक दो करोड़ से ज्यादा का ही बिजनेस है। तम्बाकू या इसी तरह के उत्पादन पर 40प्रतिशत का टैक्स है, जो संभवत भविष्य में बढ़ भी सकता है, होने के बावजूद व्यापार कम नहीं है। कुछ स्त्रियां खुले आम इन चीजों का उपयोग करते हैं लेकिन घर में उपलब्ध होने के कारण उपरोक्त पदार्थ भी सेवन हेतु उपलब्ध हो ही जाते हैं आते हैं। बुजुर्ग और कुछ हद तक नई लड़कियां भी इसका उपयोग करती हैं।

बान्दा की सड़कों पर आप चले जाइए शायद ही कोई एक ऐसा जगह  मिले जहां पर लोग ना थूकते हैं। कोने, वे कहीं भी हो, बच नही सकते। कह सकते हैं की सफाई पसंद होना यहां एक गुनाह है। जहां देखो चलती मोटरसाइकिल से, बसों से, कारों से थूक दिया जाता है, अगर यह आपके ऊपर गिर भी जाए तो आप क्या करेंगे? कभी–कभी लगता है कि सरकार अगर इन सब चीजों को पूरी तरह से बन्द कर दे तो सरकार चलना मुश्किल हो जाएंगी। इनकम टैक्स देने वाले जब कहते हैं कि सरकार हमारे टैक्स से चल रही है तो यह उनका एक छलावा है असली सरकार तो केवल नशे पर लगने वाले टैक्सों से चलती है। कानपुर में लाइसेंस से चलने वाली फैक्ट्रियां संभव उत्तर 100 से ज्यादा ही होंगे और बिना लाइसेंस के, जनश्रुति के अनुसार, 1000 से ज्यादा है, जो बिना टैक्स दिए तम्बाकू का गुटखा का उत्पादन करते हैं। बान्दा से मध्य प्रदेश की सीमा 500 मीटर से लेकर 3 किलोमीटर तक है अतः कानपुर से अनाधिकृत रूप से आने वाला तम्बाकू गुटखा मध्य प्रदेश में आसानी से चला जाता है।

कुछ गुटका व्यापारी रॉ मैटेरियल जगह–जगह से खरीद कर कानपुर में ही प्रक्रिया करते हैं जिससे मुनाफा ना जाने कितने गुना बढ़ जाता है

बुंदेलखंड में बहुत ज्यादा काम ना होने की वजह से व कामचोरी के कारण, खाली समय में लोग सुपारी खाया करते थे। उस समय एक बटुआ हुआ करता था जिसमें चार या पांच खाने हुआ करते थे। उन में सुपारी, तम्बाकू, कत्था, चूना, इलायची, लौंग, चुनौटी(चूना व तम्बाकू रखने की डिबिया) और अन्य चीज रखी रहती थी, लेकिन यही चीज है मुख्य थे। इसके अलावा एक सरौता हुआ करता था जिससे सुपारी को कतरा जाता था कत्था को भी हल्का सा कतरा जाना और चूने के साथ मिला लेना, लौंग और इलायची मिलाकर, अगर संभव है, तो पान में डालकर खा लेना। अगर दूर दराज का क्षेत्र है तो सूखा पान भी चल जाता था।

## पिछड़ापन – कारण व समाधान **Backwardness Reason and Solutions**

समय गुजरता गया सुपारी कटी हुई, तम्बाकू की प्रक्रिया किया हुआ, के पाउच मिलने शुरू हो गए चुनौटी व जो पहले स्टील की या किसी भी धातु की थी, बाद में प्लास्टिक की बनने लगी। जिसमें एक तरफ चूना और दूसरे तरफ तम्बाकू हुआ करता था, को ट्यूब या छोटी बोतल या पाउच से रिप्लेस कर दिया गया। कुछ समय तक सभी चीजें अलग–अलग मिलती रही और बटुआ में डालकर रखते थे और खाते थे। लेकिन समय प्रगति? में होता गया और एक समय आया जिसमें सारी चीज है एक ही पाउच में मिक्स हुआ करती थी, जिसका भारी विरोध हुआ। अब तम्बाकू को छोड़कर सारी चीजें एक पाउच में आती हैं और तम्बाकू उसके साथ दूसरे पाउच में दे दिया जाता है जो फ्री होता है, देखते है कि कोई कैसे नहीं खायेगा। स्वाद बढ़ाने के लिए उसमें तरह–तरह के केमिकल मिला दिए जाते हैं। कुछ तो यह भी कहते हैं कि ऐसे केमिकल होते हैं जो जीभ में हल्का सा काट देते हैं जिसे खाने वाले को उनका स्वाद ज्यादा महसूस होता है और इसी कारण से वह घाव जब नहीं भर पाता तो नासूर बन जाता है और आगे चलकर कुछ लोगों को तम्बाकू या सुपारी के कारण कैंसर भी हो जाता है। वैसे तो बान्दा में शराब की कभी कमी नहीं रही। गांव के लोग महुआ से स्वयं के लिए शराब बनाते थे व लेकिन कभी–कभी अपने साथियों को भी दे दिया जाता था। केवल महुआ की शराब स्वास्थ्यकर होती थी। लोग आलसी होते गए और शराब की डिमांड बढ़ती गई तो लोगों ने इस शराब निकालना एक पेशा बना लिया। यद्यपि ताजा और केवल महुआ की शराब स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छी होती है बशरते केवल महुआ ही हो, लेकिन मुनाफा कमाने के लिए और ज्यादा असर दिखाने के लिए अपदार्थ का उपयोग किया जाता है इस शराब में तरह–तरह की नशीली चीज और मिला दी जाती हैं और पूरी तरह प्रक्रिया ना कराके, जल्दी बनाने की कोशिश की जाती है जिससे यह जहरीली हो जाती है और मिथाइल अल्कोहल या अन्य रसायन बनने के कारण, लोगों की जान चली जाती है अन्यथा भारत सरकार के अनुसार कोई भी व्यक्ति अपने पीने के उपयोग के लिए खुली हुई बोतलों में 2 लीटर तक शराब रख सकता है। जब से सरकार ने कन्टोल शुरू किया, टैक्स मिलना शुरू हो गया तब से 60 से लेकर ₹80 तक के पौवे मिलते हैं और 40 50 पर्सेंट टैक्स के हिसाब से अकूत टैक्स मिलता है लगता है कि भारत सरकार इसी से चलती है।

इन नशे के कारण मेडीकल, स्वास्थ्य पर कितना खर्च होगा व परिवार बरबाद होंगे, कोई ध्यान नहीं देगा।

अब (2020 के आसपास)तो अन्य नशे भी शुरु हो चुके है। जैसे– हशीश, कोकीन, इन्जेक्शन अफीम, वगैरा वगैरा।